

बिक लेखक पाठक

जब मैं बैठक की जगह लौटा, तो सब गंभीर दिख रहे थे।

मैंने फ़ौरन ग़ौर किया कि कमरे की इकलौती औरत ने ख़ुद को सँभाल लिया था। उसने ख़ूबसूरत नज़ारे पर खुलने वाली हर खिड़की बंद कर दी थी, लगभग किसी नन की तरह, हालाँकि उसके कपड़े आत्मा के किसी बिलकुल अलग ही पेशे की ओर इशारा करते थे।

इस बदलाव से चर्चा को मदद मिली।

मेरा ध्यान सीधे मर्दों की तरफ़ मुड़ गया।

वे साफ़ तौर पर फ़िक्रमंद थे। अपने दरवाज़ों पर लिखे पदनाम से जुड़ा रुतबा खोने से डरे हुए। अकेली यही बात उनकी क़ाबिलियत के बारे में बहुत कुछ बता देती थी।

वे कर्मचारी थे।

यह अब लगभग किसी को याद नहीं रहता।

वे मालिक नहीं थे।

मैंने एक छोटी-सी भूमिका और एक सीधी-सी बात से शुरुआत की।

जब कोई मर्द या औरत सफ़ाई का सामान लिए कमरे में दाख़िल होता है, तो हर कोई फ़ौरन भाँप लेता है कि झाड़ू बिलकुल नई है या नहीं, क्योंकि नई झाड़ू अलग आवाज़ करती है।

वे मुझे घूरते रहे।

स्कूल के दिनों की मेरी फ़्रांसीसी काम आई, हालाँकि बरसों दूसरी भाषाएँ बोलने का असर कभी-कभी उच्चारण पर पड़ जाता था।

मैं मुस्कुराया।

फिर मैंने समझाया कि बिंग ने मेरी पोस्ट को एक संदर्भ-बिंदु बना दिया था, उसे जिलेट से जुड़ी खोजों में जगह देकर और वॉल स्ट्रीट के विश्लेषकों को उस पर मुस्कुराने और सोचने का मौक़ा देकर। दूसरी तरफ़, गूगल ने उसे अपने वेब इकोसिस्टम के भीतर बस एक मामूली असर वाली मौजूदगी माना था। और रही रूस के यांडेक्स की बात, तो उसने उसे प्रासंगिकता से लगभग पूरी तरह बाहर ही कर दिया था।

और फिर भी मैं वहाँ था।

अपने ही शहर में खड़ा।

बिक फ़्रांस का पूरा बोर्ड मेरे घर के दरवाज़े के बाहर।

साथ में शनेल, जो इस मुलाक़ात का इकलौता असली मूल्य-वर्धन बनी रही।

मैं अब भी बस एक लेखक था।

पहले से कहीं ज़्यादा, मैं नैरेटिव की ताक़त समझ रहा था। अपने पास होना, मालिक होने से ज़्यादा दिलचस्प होता जा रहा था।

और लोग ही हर कंपनी का पहला संसाधन बने रहे। समझदारी का हल कभी यह नहीं था कि किसी को घर भेज दिया जाए। समझदारी का हल था विचारों के ज़रिए चीज़ें बदलना। ठीक वही जो औरतें मर्दों के साथ उनके पैदा होते ही करती हैं।

निकलने से पहले मैंने अपना काम वाला बैग खोला। विदा लेने की तैयारी करते हुए मैंने मेज़ पर एक सीलबंद पैकेट रख दिया। उसके अंदर दस पेन थे। मैंने उनसे कहा कि मेरे जाने तक उसे न खोलें।

शनेल मेरी तरफ़ मुड़ी। “आप कहाँ जा रहे हैं?”

मैं मुस्कुराया। “मैं एक कहानी लिखने और लोगों की दुनिया बदलने जा रहा हूँ। आख़िरकार मुझे पता चल गया है कि यह कैसे होता है। फ़र्क़ बस इतना है कि जो मैं अपने लेखन के ज़रिए पेश करता हूँ, वह हमेशा बेहतर होता है।”

मेरे जाने के बाद उन्होंने पैकेट खोला। अंदर उन्हें हर पेन पर छपा एक नाम मिला: बिकजिलेटनैरेटिव।

वह एक सीधी-सादी मुलाक़ात के दौरान पैदा हुआ था। और बहुत-सी सीधी-सादी चीज़ों की तरह, वह कभी न भूलने वाला बन गया।

फर्दिनांदो